# आतंकवादी चुहिया

हिंदी में एक प्रश्नसूचक कहावत है, अक्ल बड़ी कि भैंस? मेरे विचार से तो भैंस ही बड़ी एवं आदर पाने योग्य है। क्योंकि, अक्लमंदों की जमात, जिनके पास कहने को अक्ल ज्यादा है, हमेशा ही कहेंगे कि अक्ल बड़ी है। अपने दही को कौन अहीर खट्टा कहकर बेचता है?

अगर इन अक्लमंद लोगों की मानी जाए, तो अक्ल कई किस्म की पायी जाती है। कुछ लोग कुंदबुद्धि होते हैं, तो कुछ प्रखर बुद्धि, तो कुछ कुशाग्र बुद्धि! पर दुर्भाग्यवश इंसान आपस में तुलना करने से हट, इस जगत के तमाम प्राणिवर्ग से अपनी तुलना ज्यादा नहीं करता। अपवाद के तौर पर, इन्हीं अक्लमंदों ने, गधा प्रजाति को यथोचित सम्मान देने के लिए, उनसे तुलना करने की परंपरा अवश्य रची है। पर आज तक इसी इंसानी अक्ल की तुलना, गणेशजी के वाहन मूषक से होते हुए सुनी नहीं गयी है। किसी अक्लमंद ने एक बार मेरे इस कूतुहल का समाधान करते हुए बोला था, कि अगर हम लोग चूहे की अक्ल से तुलना करेंगे, तो शर्म के मारे मर जाएंगे। क्योंकि, इंसान अपने खोखले अहं का जनाजा निकलता हुआ नहीं देख सकता।

इस बार जब मैं छुट्टी लेकर घर गया था, तो मुझे एक आतंकवादी चुहिया से जूझना पड़ा। संघर्ष खत्म होने के बाद मुझे एहसास हुआ कि एक बार के लिए तो शायद उस अक्लमंद ने अक्ल की बात कही थी।

किस्सा यूँ है कि इस बार ज्यों ही मैंने घर में कदम रखा, मेरे पीछे-२ एक चुहिया भी घर में घुस आयी। वैसे तो मेरा घर नीचे के तल पर है, और प्रकृति की सुरम्य गोद में भी है। आस-पास तमाम जीव-जन्तु होते हुए भी चूहों का प्रकोप इतने वर्षों में कभी नहीं हुआ। तो इस बार यह छोटी सी चुहिया मेरे पीछे से क्यों घुसी? बादमें अंदाज हुआ कि महारानी मुझसे झगड़ा करने और धूल चटाने के इरादे से अंदर आयीं थीं।

चुहिया ने आते ही साथ बैठक के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ लगानी शुरू की। घर के तमाम सदस्यों के कान खड़े हो गये। किसी ने टोका भी, कि भाईसाहब आप कैसे मेहमान हो, जो अपने देस से एक चुहिया साथ लेकर आये हो? मैंने कहा जनाब, मेरे पास तो मेरा जन्म प्रमाण पत्र है। पर चूहों की न तो कोई म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन होती है, और न जन्म पंजीकरण की प्रथा। तो आप कैसे कह सकते हैं कि यह चुहिया मेरे देस की ही है? जब तू-तू-मैं-मैं खत्म हुई, तो सबको असली काम, याने चुहिया भगाने की याद आयी। देखा, तो महारानी कोने में रखी कटोरी में मिगायो गयो बादामों का प्रेमपूर्वक सेवन कर रहीं थीं। जब दो लोग झगड़ते हैं, तो तीसरा हमेशा फ़ायदा उठाता है। खैर, ज्यों ही उसने देखा कि मैं हाथ में झाड़ू लेकर उसकी तरफ़ आ रहा हूँ, वो भागकर सोफ़े के नीचे छुप गयी।

हमारी बैठक काफ़ी भरा हुआ कमरा है, जिसमें सोफ़ा, किताबों की अलमारी, टी॰ वी॰ एवं उसका स्टैंड इत्यादि कई चीज़ें खड़ीं हैं। चुहिया को इन चीज़ों के बीच लुका-छिपी खेलने का अच्छा मौका मिला। एक चीज़ के नीचे जो झाड़ू लेकर खटखटाओ, तो महारानी बेफिक्री से दूसरी चीज़ के नीचे जा छुपती। भागते-भागते हम लोग पसीने से तर-बतर हो गये। आधे घंटे की मशक्कत के बाद चुहिया एक थैली में घुसी। मैंने झट से थैली का मुँह पकड़ा, और घर से करीब आधा किमी दूर, जहाँ घरों की पंक्ति समाप्त हो जाती है, उसे फेंक आया। सबने घर में चैन की सांस ली। मैंने एक बार फ़िर ठंडे पानी से नहाया, और सबके साथ दोपहर का खाना खाने बैठ गया।

खाना खाकर हम लोग उठे ही थे, कि बैठक के बाहर से घर की घंटी बजी। अंदाज सही निकला, डाकिया चिट्ठी देने आया था। पर दरवाजा खोला तो चिट्ठी तो मिली ही, वही मनहूस चुहिया दौड़ती हुई फ़िर से अंदर घुस आयी।

घर के लोग फ़िर से सकते में आ गए। अभी तो सब भरपेट खाकर उठे थे, और सोने के लिए खिसकने की ताक में थे। अब फिर से चुहिया के पीछे नाचने की इच्छाशक्ति किसी में नहीं बची थी। सबकी सहमति बनी कि चुहिया को फ़िलहाल के लिए छोड़ दिया जाए। कारण, चुहिया जितना अधिकतम घाटा कर सकती थी, उससे ज्यादा मूल्यवान सबकी नींद थी। हमने भी सोचा, कि अगले शो से पहले हाथ-पाँव ज़रा खींचकर सीधे कर लिए जाएं। पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था, कि घंटे-भर के अंदर यह चुहिया अपना रास्ता खोज निकालेगी। और-तो और, इसे क्या रास्ते में पड़ने वाले सेठों के दस-ग्यारह मालामाल घर नहीं दिखे क्या?

खैर शाम हुई, लोग एक-एक करके उठे। न तो मुझे चुहिया दिखी, और न ही लोगों की ज़ुबान पर उसकी चर्चा। शायद बुरे सपने की तरह लोग उठने के बाद उसे भूल गये थे। चाय-पानी और बातों से पेट भरते-२ रात हो आयी। शायद इसीलिए रात में सबने कम खाना खाया, और फ़िर से सोने के लिए दौड़े। मेरा बिस्तर अस्थायी तौर पर बैठक में लगा दिया गया। चुहिया की करतूतें याद करते-२ मैं सो गया। रात को सहसा मेरे पाँव में कुछ गड़ा, और मैं हड़बड़ाकर जग गया। एकदम से मुझे लगा कि कोई तो जीव मेरे पाँव के पास से निकला, चादर के अंदर-ही-अंदर भागा, और मुँह के सामने से होते हुए चारपाई से कूद गया। मेरा तो खून सूख गया।

जब हिम्मत लौटी, तो मैंने बत्ती जलाकर अपने पाँव का तलवा देखा। उसमें चोट तो नहीं आयी थी। इधर-उधर देखा, तो चुहिया भी नहीं दिखी। मैंने सुना था कि केवल भूत-प्रेत, दैत्य इत्यादि अपना बदला लेने के लिए रात में प्रतिद्वंदी पर वार करते हैं। तो क्या यह चुहिया सचमुच निशाचरी थी? क्या दोपहर में घर से उसे बाहर निकालने का बदला लेने के लिए उसने मेरे पाँव में चोंच मारी? यही उधेड़-बुन करते-२ मैंने जैसे-तैसे रात काटी।

सुबह उठकर सब लोग शौच-स्नान के चक्कर में लगे, और मामी चादर, तकिया इत्यादि समेटने में। सहसा मैंने उनकी चीख सुनी। भागकर मैं उनके कमरे में पहुँचा, तो उन्होंने बिस्तर के एक कोने की ओर इशारा किया। देखा, तो उस कोने में चुहिया सर घुमा-घुमाकर गद्दा कुतरने की योजना बना रही थी। अब मुझे चढ़ा गुस्सा, और मैंने एक तकिया चुहिया के ऊपर फेंका। चुहिया पहले अकड़ कर उछली, और फिर ठीक मेरे सामने से, मानो मेरा मजाक बनाते हुए भागी, और रसोईघर में घुस गयी। गुस्से से भुनभुनाता मैं भी रसोईघर में पहुँचा, और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया।

दरवाजा तो बंद कर लिया, पर उसके साथ ही मेरे अक्ल के दरवाजे भी बंद हो गए। कमरे में केवल एक आदमी यानि कि मैं, और इस आतंकवादी को अकेले पकड़ूँ? मेरे अहं ने मुझे सुझाया - अकेले घुसे हो, मर्द हो, इसलिए ज्यादा मत सोचो। सो मैंने एक हाथ में उठायी झाड़ू, और एक हाथ में थैली। अब चुहिया के पीछे-२ चारों धाम की यात्रा, यानि चारों कोनों की दौड़ शुरु हुई। शायद एक गधा भी बतला सकता था, कि इस तरह वो हाथ नहीं आने वाली। दस-पंद्रह मिनट तक मैं यूँ ही नाचता रहा। चुहिया की भाग-दौड़ से इस दौरान कई शीशियाँ गिरीं, और शहीद भी हुईं। पर भला जिसे केवल अपने अहं की चिंता हो, वो क्यों किसी के नुकसान और गालियों की चिंता करने चला? थोड़ी देर बाद मैं थककर बैठ गया। देखा, तो चुहिया सामने वाले कोने में खुली खड़ी होकर मुझ पर हँस रही थी। तब सहसा मुझे उस अक्लमंद की याद आयी, जिसने बिना सोचे-समझे चूहों से रार मोल लेने को मना किया था।

मैंने इधर-उधर नजर घुमायी, तो मुझे मेरे पीछे एक बोरी दिखी। अचानक दिमाग में एक विचार आया। मैंने धीरे से बोरी उठायी और उसे नल के पानी से पूरा भिगो दिया। मैंने फिर से देखा, तो पाया कि चुहिया महारानी यथावत उस खुले कोने में खड़े होकर चोंच से अपने नाखून साफ़ कर रहीं थीं। एक बार मैंने अपने भगवान को याद किया, और चुहिया पर बोरी फेंकी। इस बार आतंकवादी भाग नहीं पाया। भाईसाहब ने झट से अपना

स्कूटर निकाला, और हम लोग उसे घर से मीलों दूर, यानि वापस सीमापार के मुल्क में, फेंक आए।

तो जनाब, अब आप ही बताइये कि सारे-के-सारे अक्लमंदों की अक्ल सही में मंद है कि नहीं? नहीं तो उन्हें अपनी पीढ़ियों को अमुक कहावत सिखलानी चाहिए थी - अक्ल बड़ी कि चुहिया?